❑भक्ति-काव्य

देवियांण

ईसरदास बारठ

कवि परिचै

ईसरदास बारठ रौ जलम बाड़मेर जिलै रै गांव भादरेस में वि. सं. 1595 री चैत सुद नवमी नै होयौ। वांरै पिता रौ नांव सूराजी बारठ अर माता रौ नांव अमरा बाई हौ। बाळपणै में ई मां-बाप चालता रैया जणै वांरा काकोसा आसोजी बारठ वांनै पाळ-पोसनै मोटा करया अर ठेठ तांई आपरौ माइतपणौ निभायौ। ईसरदासजी रै जलम नैं लेयनै औ दूहौ चावौ है—

पनरा सौ पिच्याणवै, जलम्या ईसरदास।
चारण वरण चकार में, उण दिन हुवौ उजास।।

आसोजी ई ईसरदासजी नै पढाया-लिखाया अर काव्य-सिरजण री सीख ई वांनै आपरै काकोसा सूं ई मिळी। ईसरदासजी रा दोय ब्यांव होया। पैली जोड़ायत देवलबाई सूं दो बेटा जगोजी अर चूंडोजी रौ जलम होयौ। जोड़ायत री मौत सूं वांरै मन में विजोग रै कारण वैराग भाव आवण लागौ जणै काकोसा आसोजी हवा-पाणी बदळावण खातर वांनै द्वारका लेयग्या। आवती बगत गुजरात रै जामनगर रावळ जाम री सभा में गिया, उठै ईसरदासजी री काव्य-प्रतिभा सूं रावळ जाम रीझग्या। राजपंडित पीतांबर भट्ट उणां री काव्य-हटोटी सूं राजी होया अर भगवद्काव्य रचण री सीख दीवी। आगै जायनै ईसरदासजी पीतांबर भट्ट नैं आपरौ गुरु मान धरमग्रंथां रौ सार समझियौ अर आपरी रचनावां में गुरु नैं अंजस ई दियौ। ईसरदास बारठ जामनगर में इज रैया अर काका आसोजी पाछा भादरेस आयग्या हा। रावळ जाम अवसूरा साखा रा चारण पेमा भाई गढवी री बेटी राजबाई सूं ईसरदासजी रौ दूजौ ब्यांव करायौ। राजबाई री कूख सूं कवि रै तीन बेटा— गोपाळदासजी, जैसाजी, कान्हदासजी अर अेक बेटी रौ जलम होयौ। बेटी मीसण साखा रा चारणां में परणायोड़ी ही। ईसरदासजी रा वंसज आज ई है। रावळ जाम ईसरदासजी नैं संचाणो, रंगपुर, बीरबदरका, गूंढो आद केई गांवां री जागीर दीवी। रावळ जाम सूं वांनै 'क्रोड़पसाव' मिळण रौ उल्लेख ई नैणसी री ख्यात रै दूजै भाग में मिळै।

आप जीवण रा पड़ता दिनां वै आपरै गांव भादरेस आयाग्या। गांव में रैवता थकां ई लूणी नदी रै कांठै आप अेक कुटिया बणाई अर जीविया जठै तांई उण कुटिया में भगवद्-भजन करतां 80 बरसां री उमर में आपरौ सरीर छोड़ परलोक सिधाया। मध्यकाळ रा अलेखूं संत-कवियां में ईसरदासजी ई रौ चाव नांव हो। वै 'ईसरा सो परमेसरा' रै नांव सूं ओळखाण बणायी। आपरै जीवणकाळ री केई चमत्कारिक घटनावां चावी है। लोकप्रवाद अर दंतकथावां में लोकमानस आपरौ विस्वास रुखाळै। वांरै बगत रा कवियां अर उणरै पछै होया भक्त-कवियां, जिणां में मांडण, नाभादास, राघवदास, रामदास, परसराम रतनू रा नांव आवै, आपरी भक्तमाळ अर दूजी रचनावां में ईसरदासजी रौ उल्लेख घणी श्रद्धा साथै करयौ है। ईसरदास री फुटकर रचनावां रै साथै भक्तिपरक काव्य रचनावां में हरिरस, गुण रास लीला, गरुड़ पुरांण, देवियांण, गुण आगम, गुण वैराट, भगवत हंस, बाललीला, निंदास्तुति चावी है। मध्यकालीन थितियां मुजब आप वीर रसात्मक काव्य 'हालां-झालां रा कुंडळिया' रौ सिरजण करयौ जिकी वीर-काव्यां री सिरै ओळी में आवै। आपरी भक्ति रचनावां में 'हरिरस' जित्ती चावी-ठावी रचना है, 'देवियांण' सक्ति री सरब व्यापकता रौ वरणाव करण वाळी उत्ती इज चावी रचना मानीजै।

पाठ परिचै

महात्मा अर महाकवि ईसरदास कृत 'देवियांण' देस रै सांस्कृतिक इतिहास, भूगोल, प्राकृतिक परिवेस रै चित्रण साथै भक्ति, ग्यान अर वेदांत रै अद्वैत दरसण नै उजागर करण वाळी नामी रचना है। इण कारण ई भक्ति रचना 'हरिरस' रै ज्यूं ई 'देवियांण' ई भक्त रै हिरदै रौ कंठहार बण्योड़ी है।

देवियांण देवी री सरब व्यापकता नैं दरसावतौ स्तुति-काव्य है। डिंगळ री इण सक्ति-भक्ति री रचना में चार (4) मंडल छंद, पिच्यासी (85) छंद भुजंगी अर अंत में तीन (3) छप्पय देयनै कविय रचना नैं पूरी करी है। वेद, महाभारत, रामायण, पुराण, भागवत, सब में वा सरब सक्ति ई विराजमान है। अठै तांई कै आ सगळी प्रकृति जिणमें परबत, सागर, नदियां, सूरज, चांद, आभौ, बादळा, मेह, बीजळी, धरती रा कण-कण में सक्ति रौ ई संचरण है। इण आवगै ब्रह्मांड में अैड़ी कोई ठौड़ कोनी कै अैड़ी कोई वस्तु कोनी, जिणमें सक्ति रौ रूप अर नांव नीं होवै। देवियांण सक्ति-भक्ति री अनूठी रचना है। डिंगळ-सैली में ऊंचै सुर रै साथै इणरौ पाठ करीजै।

ईसरदास बारठ री भक्ति रचनावां में 'हरिरस' में परम पिता परमेसर रै गुणां रौ बखाण अर सरब व्यापकता है तौ 'देवियांण' में जगत री जननी भगवती रै गुणां अर सरब सक्ति होवण रा बखाण अर अरदास है। इण पाठ में 'देवियांण' रा कीं छंदां री बानगी दिरीजी है। कवि इण पोथी में लियोड़ा छंदां में केई नदियां रा नांव लेयनै कैवै कै— हे देवी भागीरथी (गंगा), गंडकी, गोगरा, रामगंगा (राम रा चरण पखारण रै कारण रामगंगा), सरस्वती, जमुना अर श्री (सरी) नांव वाळी लोकमाता (सिद्धा) आप ई हौ। आप ई त्रिवेणी संगम प्रयाग अर त्रिस्थली— हरिद्वार, प्रयाग, काशी में दैहिक, भौतिक अर दैविक तापां रौ नास करण वाळी हौ। हे देवी, सिंधु, गोदावरी अर माही रै साथै गोमती दमण गंगा (धम्मला), बाणगंगा, नरबदा, सरयू, गल्लका अर तुंगभद्रा आद बारहमास बैवण वाळी गंभीर (सदा नीरा) नदियां आपरौ इज सरूप है। देस रै दिखणाद में बैवण वाळी कावेरी, ताप्ति, कृष्णा, कपिला अर पैली खळकतौ महानद (सोन), आथूण-धुराऊ में सतलज, भीमा (महान), कुंवारी नदी (सुसीला, सील नैं धारण करयोड़ी), आकास-पताळ में बैवण वाळी गुप्तगंगा, पवित्र प्रगट अर अप्रगट सगळी नदियां आपरा इज तौ रूप है।

हे देवी! समदर में निपजण वाळी सीप में, स्वाति नखत री छांट इमरत बण जावै, वा मेह री छांट आप ई हौ। आ पचास करोड़ योजन भूखेतर वाळी पिरथी आपरौ इज पवित्र सरूप है। समदर में लैरां या छौळां आपरौ ई रूप है। सागर में उठण वाळी लैरां आप ई हौ, सागर में लैरां बण आप ई हिलोळा लेवौ अर आभै में बादळा बण गड़गड़ाट करण वाळी सक्ति आप इज हौ। हे देवी! अगन री झाळ (लपट, ज्वाला) में, बादळां में बीजळी री पळक अर आकास में जकौ तेज है वौ आपरौ ई है। आकास में तेजरूप (अनल पंछी) रै रूप में भमण वाळी आप ई हौ। मानव रै रूप म्रितुलोक में रमण करण वाळी ई आप हो।

हे देवी! पताळ में सेसनाग रै रूप में धरती नैं धारण करण वाळी, सुरग में देवतावां रै रूप में निवास करण वाळी, अधिकारां रौ भोग-उपभोग करण वाळी आप ई हौ। परमात्म रूप में आप हरेक सरीर में बसण वाळी हौ। आवगै ब्रह्मांड में सून-निराकार रूप में आप इज लीन हौ। हे देवी! आप आतमा रै रूप में भौतिक देह रौ संचालण करौ। सरीर रूप में आतमा नैं आणंद देवण वाळी, वन-उपवन में बसंत री सोभा आप ई हौ। अगन (दावानळ) रूप में आप ई वनां नैं बाळण वाळी हो। सिरजण, पाळण अर संहार सब आपरा ई रूप है। हे देवी! वेदां रै रूप में आप ई ब्रह्मा री वाणी हौ। योगियां में आप मच्छेन्द्रनाथ हौ अर्थात योग रै रूप में आपनैं कोई जाणै तौ वौ मच्छेन्द्रनाथ ई जाण सकै। राजा बलि में दानदाता री सक्ति ही, वा आप ई हौ। दानियां में राजा बलि आप हौ अर्थात बलि दान रूप में आपनै ई देवण वाळौ होयौ। सत रै रूप में राजा हरिश्चंद्र आपनैं ई सिद्ध करयौ। सत रूप में हरिश्चंद्र री सिद्धता आप ई हौ। योगियां रौ योग, दानवीरां री दानवीरता अर सतवादियां रौ सत आप ई हो।

हे देवी! ब्रह्मा, विष्णु, महेस में आपरी ई सत्ता, आपरी ई सक्ति (परब्रह्म स्वरूपा) बिराजमान है। चार वाणी (परा, पश्यन्ति, बेखरी, मध्यमा), चार योनियां (जरायुज, अण्डज, स्वेदज, उद्‌भिज), पंचभूत (आकास, हवा, पाणी, अगन अर पिरथी), प्राणियां में प्राणवायु (सांस) स्वरूपा आप इज तौ हो। हे महादेवी! मन, पवन, माया, मुक्ति, करम-प्रारब्ध अर परिस्रम धरम चेतना (जीव) अर काया सरबस आप ई हौ। आपरी गति अर गैराई (तत्त्व) नैं कुण जाण सकै? जिणरै माथै आपरी किरपा होवै उणरी गति नैं आपरौ ई आसरौ है।

इण भांत कवि भगवती रै अदीठपण, असीम रूप नैं प्रकृति रा कण-कण री मणिमाळ में गूंथण रा जाझा जतन कर्‌या है। डिंगळ री इण काव्यकृति रौ अेक-अेक छंद देदीप्यमान मणी है, जिण सूं तत्त्व-ग्यान रा किंवाड़ खुलै अर अंतस उजास सूं सरोबार होवै।

अेक अखंड देवी रा अलेखूं नांव अर रूपां री न्यारी-न्यारी व्यंजना भक्तकवि करै। कवि मुजब हवा, पाणी, नदी, समदर, झरणा, बादळा, आभौ, बीजळी रा पळका, मेघां री गड़गड़ाट अर सीप में स्वाति री छांट सब देवी रा ई रूप है। परतख अर अपरतख में ई देवी री सत्ता बिराजमान है। पौराणिक देवीसक्तियां अर लोकसक्तियां रै रूप में वा अेक सक्ति ई न्यारा-न्यारा नांवां अर रूपां में ओळखीजै। सिरजण, पाळण अर संहार तीनूं रूपां रौ जबरौ चित्रण कवि करै। वन, उपवन, कांकड़, परबत, गढां-कोटां-मढां, झाड़-झंखाड़ अर ऊजड़ मैदान कोई ठौड़ अैड़ी नीं जठै सक्ति रौ वास कोनी। प्रकृति रा कण-कण में अदीठ सक्ति बिराजमान है। इणमें कवि विष्णु रा अनेक अवतारां रौ वरणन कर उण रूप में ई सक्ति री सत्ता नैं बताई है। जिण मिनख या मानवी में जिकी विसेसता है उणमें सक्ति रूप विराजित है। सतवादियां रौ सत, दानवीरां री दानवीरता, जोगियां रौ जोग, रद्धाळां रौ रद्ध (वाद, जिद), धीरजवानां रौ धीरज, सीलवानां रौ सील आचरण, अहंकारियां रौ दंभ, बळसालियां रौ बळ, धरम रुखाळां रौ धरम... सब उण भगवती रा ई रूप अर नांव है। वेद, महाभारत, रामायण, पुराणां, गीता सब में देवी रौ ई रूप अर सत्ता विराजित है। 'देवियांण' ग्रंथ में संस्कृति री पिछाण, इतिहास रौ ग्यान, धरम री मरजाद, भूगोल री ओळखाण, प्रकृति रा विध-विध रूप उण परम दैवीय सक्ति रै रूप में ई देखीजै। ग्यान री गोख, भक्ति री गंगा अर वेदां रौ सार इणमें मिळै। अद्वैत दरसण री सत्ता नैं उजागर करण वाळी आ डिंगळ रचना फगत रचना कोनी, सबद चित्राम में घणी चतुराई अर अंतस री निजरां दीठोड़ी ख्यांतीला कारीगर रै हाथा साचोड़ै अनुभवां समचै ढाळ्योड़ी सक्ति री या देवी री साकार मूरत है। वा मूरत आखै ब्रह्मांड री नियामिका उण सक्ति री सरब व्यापकता में अेकता अर अखंडता नैं उजागर करै।

देवियांण

(मूळपाठ)

देवी नाम भागीरथी नाम गंगा,
देवी गंडकी गोगरा रामगंगा;
देवी सर्सती जम्मना सरी सिद्धा,
देवी त्रिवेणी त्रिस्थली ताप रुद्धा। 1

देवी सिन्धु गोदावरी मही संगा,
देवी गोमती धम्मला बाणगंगा;
देवी नर्मदा सारजू सदा नीरा,
देवी गल्लका तुंगभद्रा गंभीरा। 2

देवी कावेरी तापि क्रस्ना कपीला,
देवी सोण सतलज्ज भीमा सुसीला;
देवी गोम गंगा देवी वोम गंगा,
देवी गुप्त गंगा सूची रूप अंगा। 3

देवी सागर सीप में अमी श्रावे,
देवी पीठ तव कोटि पच्चास पावै;
देवी वेळसा रूप सामंद वाजे,
देवी बादळां रूप गैणांग गाजै। 4

देवी मंगळा रूप तू ज्वाळमाळा,
देवी कंठळा रूप तूं मेघ काळा;
देवी अन्नलं रूप आकास भम्मे,
देवी मानवां रूप मृतलोक रम्मे। 5

देवी पन्नगां रूप पाताळ पेसे,
देवी देवता रूप तूं स्रग्ग देसे;
देवी प्रम्म रे रूप पिंड पिंड पीणी,
देवी सून रे रूप ब्रह्मांड लीणी। 6

देवी आतमा रूप काया चलावे,
देवी काया रे रूप आतम खिलावे;
देवी रूप वासन्त रे वन्न राजे,
देवी आग रे रूप तूं वन्न दाझे। 7

देवी वेद रै रूप तूं ब्रह्म वांणी,
देवी जोग रै रूप मच्छंद्र जांणी;
देवी दान रे रूप बळराव दीधी,
देवी सत्त रे रूप हरचंद सीधी। 8

देवी ब्रह्म तूं विस्नू अज रूद्र रांणी,
देवी वांण तूं खांण तूं भूत प्रांणी;
देवी मन्न तूं पवन तूं मोख माया,
देवी क्रम्म तूं ध्रम्म तूं जीव काया। 9

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

रामगंगा=राम रा चरण पखारण रै कारण रामगंगा। त्रिवेणी=प्रयाग (गंगा-जमुना-सरस्वती रौ संगम-थळ), ताप रूद्धा=त्रयताप नैं मिटावण वाळी। धम्मला=दमण गंगा। मही=माही नदी। संगा=साथै। सारजू=सरयू नदी (अयोध्या में)। सदा नीरा=बारहमास बैवण वाळी। भीमा=महान, भीमकाय नदी। सुसीला=सील नैं धारयोड़ी, कंवारी नदी। गोम=पाताळ गंगा। वोम=आकास, व्योम। सूची=पवित्र, निरमळ। अलंबे=आसरौ देवण वाळी, आश्रयरूपा। सरी सिद्धा=श्री (सरी) लोकमाता (सिद्धा)। स्त्रिस्थली=हरिद्वार, प्रयाग, काशी। अमीश्रावे=स्वाति नखत री इमरत-बूंद। वाजे=हिलोरा लेवणा। दीधी=देवणो, दानरूप। सीधी=सिद्धि रै रूप सिद्ध करणौ। गैणांग गाजे=बादळां री गड़गड़ाट। मंगळा=अगन। वांण=वाणी। कंठळा=बीजळी। खांण=चार योनियां। अन्नलं=अनल पंछी। भूत प्राणी=पंचभूत अर प्राणवायु। रम्मे=रमण करणौ। मोखमाया=माया, मोक्ष। प्रम्म=परतात्मा। पीठ=क्षेत्र, भूखेत्र। पिंड पिंड पीणी=प्रत्येक सरीर में रैवण वाळी। कोटि पचास=पचास करोड़ योजन भूमि। सून=शून्य, निराकार। लीणी=लीन हौ, आपरी ई सत्ता है। वासंत=बसंत। राजे=सोभायमान। दाझे=बळणौ, दहन। आग=दावानळ। आतम खिलावे=सरीर रूप में आतमा नैं आणंद देवण वाळी। काया चलावे=सरीर रौ निर्वहन करण वाळी।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. ईसरदास बारठ रौ जलम कद होयौ—

   (अ) वि. सं. 1214 (ब) वि. सं. 1595

   (स) वि. सं. 1667 (द) वि. सं. 1415

   ( )

2. ईसरदास बारठ री जलमभोम रौ नांव है—

   (अ) जामनगर (ब) जूनागढ

   (स) भादरेस (द) बीकानेर

   ( )

3. ईसरदास री रचनावां में वीर रस री रचना है—

   (अ) हालां-झालां रा कुंडळिया (ब) गुण आगम

   (स) देवियांण (द) हरिरस

   ( )

4. ईसरदास बारठ नैं 'क्रोड़पसाव' दियौ—

   (अ) हरराज भाटी (ब) मुहणोत नैणसी

   (स) आसानंद बारठ (द) रावळ जाम

   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. टाबरपणा में ईसरदास जी रौ पाळण-पोसण कुण अर क्यूं कर्‌यौ ?
2. देवियांण में किणरौ वरणन होयौ है ?

3. ईसरदास रौ मन उदास अर बैरागी क्यूं होयौ ?
4. ईसरदास नैं अध्यात्म अर धारमिक रचनावां री सीख किणसूं मिळी ?
5. जामनगर रौ रावळ ईसरदास बारठ माथै राजी क्यूं होयौ ?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. आसोजी ईसरदासजी नैं द्वारका क्यूं लेयग्या, इणसूं उणां रै जीवण में कांई बदळाव आयौ ?
2. ईसरदास रै जलम नैं लेयनै कथीज्यौ दूहौ लिखौ।
3. ईसरदास री भक्ति रचनावां मांय सूं किणी चार रा नांव लिखौ।
4. ईसरदासजी नैं जामनगर रावळ सूं जागीर में मिळ्या गांवां रा नांव लिखौ।

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. ईसरदास रै जीवण री सामान्य ओळखाण करावौ।
2. ईसरदासजी री 'देवियांण' रौ सांगोपांग वरणाव आपरै सबदां में करौ।
3. ईसरदासजी री रचनपा 'देवियांण' में देवी रै रूप री विविधता में अेकता रौ जिकौ वरणाव होयौ है, दाखला देयनै विरोळ करौ।

नीचै दिरीज्या पद्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ—

1. देवी नाम भागीरथी नाम गंगा,
   देवी गंडकी गोगरा रामगंगा;
   देवी सर्सती जम्मना सरी सिद्धा,
   देवी त्रिवेणी त्रिस्थली ताप रुद्धा।

2. देवी सागर सीप में अमी श्रावे,
   देवी पीठ तव कोटि पच्चास पावै;
   देवी वेळसा रूप सामंद वाजे,
   देवी बादळां रूप गैणांग गाजै।

3. देवी पन्नगां रूप पाताळ पेसे,
   देवी देवता रूप तूं स्रग्ग देसे;
   देवी प्रम्म रे रूप पिंड पिंड पीणी,
   देवी सून रे रूप ब्रह्मांड लीणी।

4. देवी ब्रह्म तूं विस्नू अज रूद्र रांणी,
   देवी वांण तूं खांण तूं भूत प्रांणी;
   देवी मन्न तूं पवन तूं मोख माया,
   देवी क्रम्म तूं ध्रम्म तूं जीव काया।